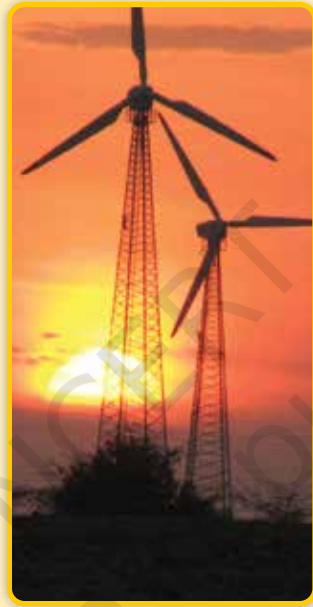


सामाजिक विज्ञान संसाधन एवं विकास



कक्षा 8 के लिए
भूगोल की पाठ्यपुस्तक



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

फरवरी 2008 माघ 1929

पुनर्मुद्रण

जनवरी 2009 माघ 1930

जनवरी 2010 माघ 1931

जनवरी 2011 माघ 1932

जून 2012 ज्येष्ठ 1933

मार्च 2013 फाल्गुन 1934

नवंबर 2013 कार्तिक 1935

नवंबर 2014 अग्रहायण 1936

PD 50T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
2008

₹ 50.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम.
पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली
110 016 द्वारा प्रकाशित तथा ओम इंटरप्राइजेज, डी-75,
सैक्टर-63, नोएडा (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-823-2

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैपस	
श्री अरविंद मार्ग	
नयी दिल्ली 110 016	फोन : 011-26562708
108, 100 फीट रोड	
हेली एक्सटेंशन, होस्टेकरे	
बनाशंकरी III इस्टेज	
बैंगलूर 560 085	फोन : 080-26725740
नवजीवन ट्रस्ट भवन	
डाकघर नवजीवन	
अहमदाबाद 380 014	फोन : 079-27541446
सी.डब्ल्यू.सी. कैपस	
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी	
कोलकाता 700 114	फोन : 033-25530454
सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स	
मालीगांव	
गुवाहाटी 781021	फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	: एन. के गुप्ता
मुख्य उत्पादन अधिकारी	: कल्याण बनर्जी
मुख्य संपादक	: श्वेता उप्पल
मुख्य व्यापार प्रबंधक	: गौतम गांगुली
उत्पादन सहायक	: सुनील कुमार

आवरण, सज्जा एवं चित्रांकन
ब्लूफिश

कार्टोग्राफी
कार्टोग्राफिक डिजाइंस एजेंसी



आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक विद्यालय और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मजबूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि विद्यालयों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक जिंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितनी वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक विद्यालय में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में विचार-विमर्श और ऐसी गतिविधियों को प्राथमिकता देती है जिन्हें करने के लिए व्यावहारिक अनुभवों की आवश्यकता होती है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर हरि वासुदेवन और इस पाठ्यपुस्तक समिति की मुख्य सलाहकार विभा पार्थसारथी की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान दिया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के

आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री और सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित परिषद् टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

नई दिल्ली
20 नवंबर 2007

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

हरि वासुदेवन, प्रोफेसर, इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

मुख्य सलाहकार

विभा पार्थसारथी, प्रिंसिपल (अवकाश प्राप्त), सरदार पटेल विद्यालय, नयी दिल्ली

सदस्य

अनिन्दिता दत्ता, लेक्चरर, दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
अपर्णा पांडेय, लेक्चरर, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान

और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

अंशु, रीडर, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

पुनम बिहारी, वाइस प्रिंसिपल, मिरांडा हाऊस, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

भगीरथी झिंगरन, टी.जी.टी., पाथवेज वर्ल्ड स्कूल, गुड़गाँव

मीरा हूण, टी.जी.टी., मॉडर्न स्कूल, बाराखम्बा रोड, नयी दिल्ली

श्यामला श्रीवत्स, टी.जी.टी., सरदार पटेल विद्यालय, नयी दिल्ली

समिता दास गुप्ता, पी.जी.टी., आनंदालय, आनंद, गुजरात

श्रीनिवासन के., टी.जी.टी., माल्या अदिति इंटरनेशनल स्कूल, बंगलौर

हिंदी अनुवाद

भावना मोहन, उत्तम नगर, नयी दिल्ली

रंजन कुमार चौधरी, पी.जी.टी., गवर्नमेंट सहशिक्षा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खेड़ा डाबरा

सदस्य-समन्वयक

तनु मलिक, लेक्चरर, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, इस पुस्तक के विकास में सहयोग देने हेतु प्रमिला कुमार, प्रोफेसर (अवकाश प्राप्त), भोपाल एवं शिप्रा नायर, दार्जिलिंग का आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, वीर सिंह आर्य, प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी (अवकाशप्राप्त), वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार; नरेन्द्र डबास, लेक्चरर, एस.सी.ई.आर.टी., हरियाणा; दीपावली बधवार, लेक्चरर, एस.सी.ई.आर.टी., हरियाणा; निरंजन प्रसाद शर्मा, पी.जी.टी., गवर्नमेंट बाल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, रेलवे कॉलोनी, तुगलकाबाद, नयी दिल्ली का भी आभार व्यक्त करती है, जिन्होंने अनुवाद के पुनरीक्षण हेतु अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

परिषद्, सविता सिन्हा, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग के प्रति भी अपनी कृतज्ञता अर्पित करती है, जिन्होंने प्रत्येक स्तर पर इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में अपना अमूल्य सहयोग दिया।

परिषद्, प्रस्तुत पुस्तक के निर्माण में निम्नोक्त सभी व्यक्तियों एवं संगठनों का आभार व्यक्त करती है जिन्होंने इस पाठ्यपुस्तक को सहज बनाने हेतु विभिन्न चित्र एवं अन्य पाठ्य सामाग्री उपलब्ध करवाई:

अशु, रीडर, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली को चित्र 2.5, 2.15 एवं 4.14 के लिए; श्रीनिवासन के., टी.जी.टी., माल्या अदिति इंटरनेशनल स्कूल, बंगलौर को चित्र 3.7 एवं पृष्ठ 45 पर मक्का की विभिन्न प्रकारों के चित्र के लिए; आस्ट्रिया से कृष्ण श्योराण को चित्र 2.1 के लिए; मोहम्मद असलम, लर्निंग टच, नयी दिल्ली को चित्र 4.4 के लिए; आशीष चटवाल, राजौरी गार्डन, नयी दिल्ली को चित्र 3.8 के लिए; आर.सी. दाश, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली को चित्र 2.8, 2.10 एवं पृष्ठ 50 पर बाँस के झुंड के चित्रों के लिए; निमिषा कपूर को मुख्य पृष्ठ पर दिए गए पवन-चक्की, छात्रों एवं कुम्हार के चित्रों के लिए; ब्लूफ़िश को चित्र 1.1, 5.11 एवं पृष्ठ 50 पर अभ्यास पुस्तिका के चित्र के लिए; डी.एम.डी.गृह मंत्रालय को पृष्ठ 12, 53 एवं 54 पर क्रमशः प्रतिधारी दीवार, यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री एवं गाओ क्याओ में बचाव अभियान के चित्रों के लिए; उद्योग मंत्रालय, बिहार सरकार को चित्र 4.5, 4.6, 4.13 एवं 5.1 के लिए; डायरेक्टोरेट ऑफ़ एक्सटेंशन, कृषि मंत्रालय, आई.ए.आर.आई. कैम्पस, न्यू पूसा, नई दिल्ली को चित्र 2.9, 4.9, 4.10, 4.11 एवं 4.14 के लिए; पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार को चित्र 2.11, 2.12, 2.13, 2.14, 2.16, 2.17, 2.18, 2.19 एवं पृष्ठ 18 पर गिद्ध के चित्र के लिए; कोयला मंत्रालय, भारत सरकार को चित्र 3.1 एवं 3.12 के लिए; नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार को चित्र 3.17 के लिए; सी.ओ.एम.एफ.ई.डी., पटना को चित्र 5.2 के लिए; विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार को चित्र 3.9, 3.15 एवं 3.18 के लिए; ओ.एन.जी.सी. को चित्र 3.4 एवं 3.13 के लिए; आई.टी.डी.सी. पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार को चित्र 3.11 के लिए; सामाजिक विज्ञान, पाठ्यपुस्तक, कक्षा 8, भाग 2, एन.सी.ई.आर.टी., 2005 को चित्र 2.6, 2.7, 4.7, 4.8, 4.12, 4.16, 4.17, 4.18 एवं पृष्ठ 12 पर भूस्खलन के चित्र के लिए; द टाइम्स ऑफ़ इंडिया, हिंदुस्तान टाइम्स एवं इंडियन एक्सप्रेस को पृष्ठ 20 पर दिए गए समाचारों के लिए; अरविंद गुप्ता, आई.यू.सी.ए.ए., पूना को पृष्ठ 34 पर दिए गए सोलर वर्कर के क्रियाकलाप के लिए एवं कौशल शर्मा, रीडर, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली को पृष्ठ 12 पर दिए गए भूस्खलन के वस्तुस्थिति अध्ययन के लिए।

परिषद् पाठ्यपुस्तक के निर्माण में उल्लेखनीय सहयोग देने हेतु उत्तम कुमार, अनिल शर्मा, मुकद्दस आजम, डी.टी.पी. ऑपरेटर; सतीश झा, कॉपी एडिटर; अचल कुमार, प्रूफ रीडर तथा दिनेश कुमार, कंप्यूटर स्टेशन इंचार्ज का भी हार्दिक आभार व्यक्त करती है। इसी संदर्भ में प्रकाशन विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. का सहयोग भी प्रशंसनीय है।

विषय सूची

आमुख	iii
अध्याय 1 संसाधन	1-8
अध्याय 2 भूमि, मृदा, जल, प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीवन संसाधन	9-23
अध्याय 3 खनिज और शक्ति संसाधन	24-39
अध्याय 4 कृषि	40-49
अध्याय 5 उद्योग	50-65
अध्याय 6 मानव संसाधन	66-75

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक ¹[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की स्वतंत्रता,

प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और ²[राष्ट्र की एकता

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली बंधुता

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को एतद्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) “प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य” के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) “राष्ट्र की एकता” के स्थान पर प्रतिस्थापित।